“ मानव जाति की सेवा का अवसर परमेश्वर का प्रसाद समझो , पूर्ण कृतज्ञता से करो क्योंकि स्वयं परमेश्वर तुम्हारी उस सेवा को स्वीकार करते हैं - ग्रहण करते हैं । ”

श्री सत्य साई बाबा

बालविकास मासिक पत्रिका के लिये सम्पर्क करें
धर्म क्षेत्र , महाकाली केव्स रोड, अंधेरी ईस्ट , मुंबई - 400093
वार्षिक शुल्क - 80 रू.

Web Site – www.sssbalvikas.org

।। ॐ श्री साईराम ।।

“ संसार में केवल एक ही जाति है मानवता की जाति ” - बाबा

श्री सत्य साई सेवा संगठन म.प्र. एवं छत्तीसगढ़

माता पिता पालकों की सार्थक भूमिका

यदि हृदय पवित्र होगा, तो चरित्र में सुन्दरता आएगी ।

यदि चरित्र में सुन्दरता होगी, तो घर में सामन्जस्य होगा ।

यदि घर में सामन्जस्य होगा, तो राष्ट्र में **अनुशासन** आएगा ।

यदि राष्ट्र में **अनुशासन** होगा, तो **विश्व** में शांति आ जाएगी ।

गंभीर चिंतन

शिक्षा का उद्देश्य धनार्जन नहीं, अपितु चरित्र निर्माण होना चाहिए ।

वर्तमान समय में भौतिक संसाधनों का विकास पराकाष्टा पर है । किन्तु चारित्रिक नैतिक मूल्यों की प्रगति का अनुपात बहुत कम हो गया । जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति, परिवार व समाज में अनैतिकता सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रही है । बच्चों व युवाओं में जिसका परिणाम है–

1- **जातिगत** भेदभाव
2. भ्रष्टाचार धोखाधड़ी
3. संयुक्त परिवार विघटन–तलाक समस्या
4. माता–पिता, गुरूजनों के प्रति असम्मान
5. घर, समाज, शाला में हिंसा
6. पथभ्रष्ट युवा– शराब, **नशा** , गुटका आदि मादक पदार्थों के सेवन की आदत ।

समाधान क्या है ?

वर्तमान **शिक्षा** पद्धति, छात्रों में बौद्धिक **कौशल** लाने का प्रयास कर रही है, किन्तु उनमें नैतिकता का अभाव हो रहा है । यह नाली में बहने वाले गंदे पानी की तरह है । वे अनन्त इच्छाओं के साथ बातों में हीरों हैं, पर कार्य में जीरो ।

समाधान है श्री सत्य साई बाल विकास

श्री सत्य साई बाल विकास बच्चों में दिव्य रूपान्तरण लाता है । उनमें सकारात्मक सोच लाता है । सत्य, सदाचरण, शांति, प्रेम व अहिंसा को स्थापित करने का प्रयास करता है ।

उद्देश्य

1. बच्चों में **ईश्वर** के प्रति प्रेम भक्ति जगाना ।
2. राष्ट्र के लिए त्याग, सहिष्णुता व प्रेम होना ।
3. अपने धर्म में मजबूत रहना, पर दूसरे धर्म का सम्मान करना ।
4. सबसे प्रेम सबकी सेवा की भावना जगाना ।
5. सदा मदद करना, आहत कभी नहीं करना ।
6. मानवीय मूल्यों को आत्मसात करना, जीवन में वैसा ही व्यवहार करना ।
7. माता–पिता, बड़ों का आदर व सेवा करना ।
8. दीन–दुखियों की सहायता करना ।
9. एक अच्छी संतान बनकर छात्र धर्म का पालन करना । बालक का सर्वांगीण विकास होने पर लोक विकास संभव होगा ।

कार्यक्रम के प्रतिभागी

इस कार्यक्रम में 5 से 15 वर्ष के बच्चे तथा 16 से 18 वर्ष के युवा भाग ले सकते हैं।

आयु	कक्षा	समूह
5,6,7,8	1,2,3	प्रथम
9,10,11	4,5,6	द्वितीय
12,13,14,15	7,8,9,10	तृतीय
16,17,18	11,12	प्री–सेवादल

18 वर्ष के बाद युवा वर्ग में शामिल हो सकते हैं ।

9 वर्ष पूर्ण करने वाले बच्चों को श्री सत्य साई षिक्षा का डिप्लोमा प्रदान किया जाता है ।

बाल विकास कक्षा समय एवं स्थान

समय – सप्ताह में एक दिन 1 घंटे 15 मिनिट

स्थान – गुरू का निवास अथवा सार्वजनिक सुरक्षित स्थान

अध्यापन पद्धति एवं तकनीक

यह **शिक्षा** विपरीत परिस्थितियों में भी बच्चों को नैतिक व अध्यात्मिक दृढ़ता से सामना करना **सिखाती** है ।

''बाबा''

इसमें पॉच तकनिकों के माध्यम से चरित्र निर्माण व मूल्यों को आत्मसात कराने का प्रयास किया जाता है ।

1. मौन बैठक – सोहम, स्वरूप ध्यान, विचार यात्रा, ज्योति ध्यान ।
2. प्रार्थनाएं – वेद गीता, उपनिषद, विभिन्न देवी–देवताओं, दैनिक जीवन व विविध धर्मों की प्रार्थनाएं ।
3. कहानी कथन ।
4. समूह गान - भजन, मूल्यगीत, **देश-भक्ति** गीत
5. सामूहिक गतिविधियां – रोल प्ले, अभिवृत्ति परीक्षण, मूल्यपरक खेल, रचनात्मकता, समूह चर्चा ।

मूल्यांकन

उन बच्चों का व्यवहार घर, शाला व समाज में देखा जाता है, उनमें अनुशासन, भक्ति, कर्त्तव्य, विवेक, संकल्प की दृढ़ता आती है । गुरू व बालक के सहयोग से मूल्यांकन कार्ड भरा जाता है । प्रतिदिन बच्चे के द्वारा आध्यात्मिक डायरी भराई जाती है ।

माता पिता की सकारात्मक भूमिका और सहयोग – जानना समझना और करना

1. बाल विकास कार्यक्रम की जानकारी होना ।
2. कक्षा में बच्चों का **पाठशाला** की तरह नियमित भेजना ।
3. बच्चों से अध्यात्मिक डायरी सही रूप में भरवाने में मदद करना ।
4. कक्षा में सिखाई गइ **शि** क्षाओं का पालन करवाना व स्वयं भी करना ।
5. नए परिवार के बच्चों को भी इस **दिशा** में जोड़ना, ताकि अच्छे बच्चों का समूह बन सकें ।
6. संगठन के समाज सेवा कार्यों में स्वयं जुड़ना, बच्चों को भी जोड़ने का प्रयास करना।
7. परिवार के साथ घर में दैनिक प्रार्थना 5 से 15 मिनिट, सप्ताह में घर में एक बार भजन करना ।
8. यदि सक्षम है तो स्वयं आगे आकर अन्य सक्षम लोगों के साथ बाल विकास आन्दोलन में **शिक्षा** फेकल्टी, **संदेश** वाहक के रूप में जुड़ना ।

9. **व्यक्तिगत लक्ष्य** – माता–पिता का स्वयं का कर्त्तव्य वे स्वयं के व्यवहार में परिवर्तन लाए। आत्मसम्मान, **आत्मविश्वास** जागृत करें । वे रोल मॉडल बने । आध्यात्मिकता से भरपूर हो संवेदनाओं और विचारों द्वारा रूपान्तरण लाने में सक्षम हो । जागृत करें ।
10. **बच्चों के प्रति** – बच्चों के साथ शांतिपूर्ण, हंसमुख, प्रेमपूर्ण व्यवहार हो । **अनुशासन** विनम्रता, आदरपूर्वक व्यवहार करना बच्चों को सिखाएं । घर में शांति व एकता स्थापित हो ।
11. **समाज के प्रति** – यह कार्यक्रम सद्भाव, सदृढ़ता, स्थिरता व समृद्धिमय समाज को स्थापित करेगा ।

आईये हम **प्रगतिशील** माता पिता बनकर श्री सत्यसाई बाल विकास आंदोलन में अपनी सार्थक भूमिका निभाएं ।

साईराम